पाठ 4 **अक्टूबर 21-27**

विश्वास के द्वारा धार्मिकता

सब्त अपराह्न **अक्टूबर 21**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : रोमि० 3:19-28

याद वचनः *"इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है"* (रोमियों 3: 28)।

इस पाठ में हम रोमियों के मूल विषय में आते हैं : विश्वास के द्वारा धार्मिकता किसी दूसरे सत्य से महान सत्य, जो प्रोटेस्टेन्ट सुधार को लेकर आया। और सभी दावों के बावजूद, विपरीतार्थ, रोम ने इस विश्वास से संबंधित कोई बदलाव अभी नहीं किया है जो 1520 में उसने किया था, जब पोप लियो ने पोपीय आदेश निकल कर लूथर और उसकी शिक्षाओं को दोषी माना। लूथर ने आदेश की एक प्रति को जला डाला क्योंकि यदि एक ही शिक्षा होती तो समझौता नहीं हो पाता, विश्वास द्वारा धार्मिकता थी और यह है। वाक्यांश स्वयं व्यवस्था पर आधारित एक रूप है। व्यवस्था अतिक्रमी न्यायाधीश के सामने आता है और अपने पापों के लिए मृत्यु का दोषी ठहराया जाता है। परन्तु एक प्रतिनिधि प्रकट होता है और अतिक्रमी के दोषों को अपने ऊपर ले लेता है, इस प्रकार अपराधी को साफ करता है। प्रतिनिधि को ग्रहण करने के द्वारा अपराधी अब न्यायाधीश के सामने खड़ा होता है, उसके अपराध ही साफ नहीं हुए वरन् कभी पाप नहीं किया हुआ गिना गया, जिन पापों के लिए पहले वह अदालत में लाया गया था। और यह प्रतिनिधि के कारण है - जिसके पास सिद्ध रिकार्ड है - क्षमा प्राप्त अपराधी को अपनी सिद्ध व्यवस्था मानने के लिए देता है।

उद्धार की योजना में हम में से प्रत्येक अपराधी है। प्रतिनिधि, यीशु का सिद्ध रिकार्ड है, और अदालत में वह हमारे लिए खड़ा होता है, उसकी धार्मिकता हमारी अधार्मिकता के स्थान पर स्वीकारी गयी। इस प्रकार परमेश्वर के सामने हम धर्मी गिने गये हैं, हमारे कामों के द्वारा नहीं वरन् यीशु के द्वारा, जिसकी धार्मिकता हमारी होती है जब हम "विश्वास के द्वारा" इसे ग्रहण करते हैं। सुसंवाद के विषय बातें करें! वास्तव में, समाचार इससे बेहतर नहीं हो सकता।

रविवार **अक्टूबर 22**

व्यवस्था के काम

पढ़ें रोमियों 3:19,20 पौलुस यहाँ पर व्यवस्था के विषय क्या कह रहा है, यह क्या करता है, और यह क्या नहीं करता या नहीं कर सकता है? सभी मसीहियों को यह बिन्दु समझना क्यों इतना महत्त्वपूर्ण है?

पौलुस शब्दावली व्यवस्था को इसके बृहत्तर अर्थ में व्यवहार कर रहा है जैसे कि उसके समय के यहूदी इसे समझ चुके थे। शब्द तोरह से (व्यवस्था के लिए इब्रानी शब्द) आज भी एक यहूदी खासकर परमेश्वर के निर्देश के विषय सोचता है जो मूसा की प्रथम पांच किताबों में है और सामान्यत: सम्पूर्ण बाइबल में है। नैतिक व्यवस्था इसके विस्तारण को कानून एवं न्याय में बढ़ोत्तरी करता है, साथ ही साथ विधि व्यवस्था इस निर्देश का हिस्सा थी। इसके कारण हम व्यवस्था को यहाँ पर यहूदियों के तौर-तरीकों के रूप में सोचते हैं।

व्यवस्था के अधीन होने का अर्थ है इसके न्याय के अधिकार क्षेत्र में होना। व्यवस्था यद्यपि एक व्यक्ति की कमी और दोष को परमेश्वर के सामने प्रकट करती है। व्यवस्था उस दोष को हटा नहीं सकती; जो यह कर सकती है वह है पापी को इसके उपचार की खोज में अगुवाई करना।

जैसा हम रोमियों की किताब को हमारे दिन में लागू करते हैं, जब यहूदी व्यवस्था एक कारण नहीं रहा है, हम व्यवस्था को खासकर नैतिक व्यवस्था के रूप में सोचते हैं। यह व्यवस्था हमें नहीं बचा सकती इसकी अपेक्षा यहूदी तौर-तरीके यहूदियों को बचा सकती। एक पापी को बचाना नैतिक व्यवस्था का कार्य नहीं है। इसका कार्य परमेश्वर के चरित्र को प्रकट करना और लोगों को दिखाना कि वे कहाँ पर उस चरित्र को परिवर्तित करने से चूक गये।

यह जो भी व्यवस्था हो - नैतिक, विधि, नागरिक, अथवा संयुक्त - किसी एक का पालन करना या सबका पालन एक व्यक्ति को परमेश्वर की दृष्टि में सिद्ध नहीं बनायेगा। वास्तव में, व्यवस्था ने इसे करने की कभी कोशिश नहीं की। इसके विपरीत व्यवस्था को हमारे दोषों को इंगित करना था और हमें मसीह की ओर अगुवाई करना था। व्यवस्था हमें बचा नहीं सकती वैसा ही जैसा बीमारी के लक्षण बीमारी को ठीक नहीं कर सकता। लक्षण ठीक नहीं कर सकते; वे ठीक होने की जरूरत को इंगित करते हैं। व्यवस्था इस प्रकार कार्य करती है।

व्यवस्था पालन में आपके प्रयास कितने सफल रहे हैं? व्यवस्था पालन के द्वारा बचाये जाने के प्रयास की निरर्थकता के विषय वह जवाब आपको क्या बतलाना चाहिए?

सोमवार **अक्टूबर 23**

परमेश्वर की धार्मिकता

"परन्तु अब व्यवस्था से अलग परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं" (रोमि० 3:21) में किस प्रकार समझाना है कि इस प्रसंग का क्या तात्पर्य है?

यह नई धार्मिकता व्यवस्था की धार्मिकता के साथ तुलना की जाती है, वह धार्मिकता थी जिससे यहूदी परिचित थे। नई धार्मिकता "परमेश्वर की धार्मिकता" कहलाती है; वह धार्मिकता जो परमेश्वर से आती है, एक धार्मिकता जो परमेश्वर देता है, और केवल एक जिसे वह सच्ची धार्मिकता के तौर पर स्वीकार करता है।

निस्संदेह यही धार्मिकता है जिसे यीशु ने यहाँ पर मानव देह में अपने जीवन में लायी - एक धार्मिकता जिसे वह उन सबों को देता है जो इसे विश्वास के द्वारा स्वीकार करते हैं, जो स्वयं के लिए इसका दावा करेंगे इसलिए नहीं कि वे इसके हकदार हैं पर इसलिए कि इसकी उन्हें जरूरत है।

"धार्मिकता व्यवस्था के प्रति आज्ञा पालन है। व्यवस्था धार्मिकता की मांग करती है, और पापी व्यवस्था के प्रति ऋणी होता है; लेकिन वह इसे प्रति दान करने में अक्षम है। एकमात्र रास्ता जिसके द्वारा वह धार्मिकता को प्राप्त कर सकता है वह है विश्वास के द्वारा। विश्वास के द्वारा वह मसीह की विशेषता को परमेश्वर के पास ला सकता है, और परमेश्वर अपने बेटे की आज्ञाकारिता को पापी के खाते में डाल देता है। मनुष्य की असफलता के स्थान पर मसीह की धार्मिकता ग्रहण की जाती है, और परमेश्वर ग्रहण करता है,क्षमा करता है, उचित ठहराता है, पश्चात्तापी, विश्वासी आत्मा, उसे ऐसा बर्ताव करता है मानों वह धर्मी है, और उससे प्रेम करता है जैसा वह अपने पुत्र से प्रेम करता है।" - *एलेन जी० ह्वाईट, सेलेक्टेड मैसेजेस, बुक 1, पेज 367,* आप स्वयं के लिये इस अद्‌भुत सत्य को ग्रहण करना कैसे सीख सकते हैं, देखें रोमि० 3:22 ।

निस्संदेह, यीशु मसीह का विश्वास यहाँ पर है, यीशु मसीह में विश्वास । जैसा यह मसीही जीवन में कार्य करता है, विश्वास बौद्धिक सहमति से बढ़कर है; यह मसीह के जीवन और उसकी मृत्यु के विषय में खास तथ्यों को स्वीकारने से बढ़कर है। यीशु

मसीह में सच्चा विश्वास उद्धारकर्त्ता के तौर पर, प्रतिनिधि के रूप में, जमानती के तौर पर और प्रभु को ग्रहण कर रहा है। यह उसके जीवन की राह को चुन रहा है। यह उसपर भरोसा कर रहा है और विश्वास के द्वारा उसकी आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीना चाह रहा है।

मंगलवार **अक्टूबर 24**

उसके अनुग्रह के द्वारा

व्यवस्था के विषय इतनी दूर तक हमने जो अध्ययन किया है उसे मन में रखते हुए और यह कि व्यवस्था क्या नहीं कर सकती है, पढ़ें रोमियों 3:24, पौलुस यहाँ पर क्या कह रहा है? इसका क्या तात्पर्य है कि उद्धार यीशु में है?

"धर्मी ठहराया जाना" का यह विचार क्या है, जैसा पदस्थल में मिलता है? ग्रीक शब्द डिकाईऊ (dikaioo) का अनुवाद 'धर्मी ठहराना' हुआ है, जिसका अर्थ यह भी होता है "धर्मी बनाना", "धर्मी घोषित करना", या "धर्मी समझना"। शब्द उसी मूल पर बना है जैसे (dikaiosune) डिकाईओसुन, "धार्मिकता" और शब्द डिकाईओमा (Dikaioma), "धार्मिक जरूरत।" इस प्रकार "प्रमाणिकता" और "नेकी" के बीच नजदीकी संबंध है, एक संबंध जो हमेशा विभिन्न अनुवादों के रूप में नहीं आता। हम न्यायोचित ठहरते हैं जब हम परमेश्वर द्वारा "नेक घोषित" होते हैं।

इस धार्मिकता से पूर्व एक व्यक्ति अधर्मी होता है और इस प्रकार परमेश्वर को अस्वीकार्य होता है; धार्मिकता (प्रमाणिकता) के बाद वह धर्मी गिना जाता है और इस प्रकार उसको स्वीकार्य होता है। और यह केवल परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा होता है। अनुग्रह का अर्थ है कृपादृष्टि रखना। जब एक पापी उद्धार के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ता है, यह अनुग्रह का कार्य होता है कि उस व्यक्ति को धर्मी घोषित करे या माने। यह अनर्जित कृपादृष्टि है, और विश्वासी किसी गुण विशेष के बगैर धर्मी गिना जाता है। स्वयं की ओर से परमेश्वर के सामने बिना किसी दावे के केवल उसके नितांत निस्सहाय के कारण। मसीह यीशु में उद्धार के द्वारा व्यक्ति न्यायोचित (धर्मी) ठहरता है, उद्धार जिसे यीशु पापी के प्रतिनिधि और जमानत के तौर पर प्रदान करता है।

रोमियों में धार्मिकता एक शिष्टाचारी कार्य के तौर पर प्रस्तुत की गई है; यह एक नियत समय पर होती है। एक क्षण में पापी बाहर होता है, अधर्मी, और अस्वीकार्य होता है; दूसरे क्षण में धार्मिकता का पीछा करके, व्यक्ति अंदर होता है, स्वीकार्य है, धर्मी है। एक व्यक्ति जो मसीह में है धार्मिकता को बीती हुई बात के समान देखता है, उस बदलाव को जब वह स्वयं को पूर्णरूपेण मसीह में समर्पित होता देखता है। "धर्मी गिना गया" (रोमि० 5:1) शाब्दिक अर्थ में "न्यायोचित ठहराया गया।"

निस्संदेह यदि न्यायोचित (धर्मी) ठहराया गया पापी गिर पड़े और तब मसीह की ओर फिरे, धार्मिकता पुन: घटित होगी। यदि पुन: मनपरिवर्तन प्रतिदिन का अनुभव माना जाये, एक प्रत्यक्ष ज्ञान होगा जिसमें धार्मिकता एक आवर्ती अनुभव माना जायेगा।

उद्धार के सुसंवाद के साथ सुस्वाभाव होना, इसे ग्रहण करने से लोगों को पीछे क्या खींचता है? आपके स्वयं के जीवन में कौन-सी चीजें आपको उससे वापस खींचती है, जो परमेश्वर आपको प्रतिक्षा करता और देता है?

बुधवार **अक्टूबर 25**

मसीही की धार्मिकता

रोमियों 3:25 में, पौलुस उद्धार के महान संवाद पर आगे व्याख्या करता है। वह अनोखे शब्द प्रायश्चित का प्रयोग करता है। इसके लिए ग्रीक शब्द हिलास्टेरियन

(hilasterion) केवल इब्रानी की किताब 9:5 में, नये नियम में पाया जाता है, जहाँ पर इसका अनुवाद "कृपा-आसन" हुआ है। जिस प्रकार रोमियों 3:25 मसीह द्वारा धार्मिकता और उद्धार दिये जाने का वर्णन करता है, प्रायश्चित सभी मांगें पूरी करने का प्रतिनिधित्व करता है जो पुराने नियम के पवित्र-स्थान में कृपा आसान का प्रतीक है। इसका अर्थ तब क्या है, यह क्या उसकी बलिदानी मृत्यु के द्वारा है, यीशु ने उद्धार के साधन को पूरी तरह तय किया है और प्रायश्चित की व्यवस्था करने वाले की तरह प्रतिनिधित्व किया। संक्षित में, इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने वह किया जो हमें बचाने के लिए जरूरी था।

पदस्थल (प्रसंग) भी "पाप क्षमा" की बातें करता है। यह हमारा पाप है जो हमें परमेश्वर को अस्वीकार्य है। हम स्वयं अपने पापों को निरस्त करने के लिए कुछ कर नहीं सकते। परन्तु उद्धार की योजना में, परमेश्वर ने मसीह के रक्त में विश्वास के द्वारा इन पापों से क्षमा पाने के लिए एक रास्ता व्यवस्थित किया है।

शब्द "क्षमा" के लिए ग्रीक शब्द परेसिस है जिसका शाब्दिक अर्थ है "दूर होना" या "चला जाना"। "दूर होना" पापों की अनदेखी का अर्थ नहीं बताता। परमेश्वर विगत समय के पापों को दूर कर सकता है क्योंकि मसीह ने अपनी मृत्यु के द्वारा सब लोगों के पापों के दण्ड के लिए कीमत अदा की है। इसलिए कोई भी जो "उसके खून में विश्वास" करे उसके पाप क्षमा हो सकते हैं, क्योंकि मसीह पहले ही उनके निमित्त मर गया है (1कुरि० 15:3)

पढ़ें रोमियों 3:26,27, पौलुस यहाँ पर कौन से बिन्दु को रेखांकित कर रहा है?

सुसंवाद जिसे पौलुस सभों के साथ साझा करने को उत्सुक था जो सुनना चाहते हों वह यह कि मानवता के लिए "उसकी (परमेश्वर की) धार्मिकता" उपलब्ध थी, और यह कि यह हमारे कामों के द्वारा हमारे पास नहीं आता, हमारे गुणों के द्वारा नहीं, परन्तु यीशु में और जो भी उसने हमारे लिए किया है उस पर विश्वास के द्वारा हमारे पास आता है।

कलवारी के क्रूस के मरण, परमेश्वर पापियों को धर्मी घोषित कर सकता है और अभी भी न्यायसंगत और उचित, जगत की आँखों में विचारे जा सकते हैं। शैतान परमेश्वर पर दोष देने के लिए उंगली नहीं उठा सकता, क्योंकि स्वर्ग ने श्रेष्टतम बलिदान को बनाया है। उसके देने की इच्छा से अधिक मानवजाति को मांगने के लिए शैतान ने परमेश्वर को दोषारोपित किया। क्रूस इस दावे का खण्डन करती है।

शैतान कदाचित् पाप के बाद परमेश्वर से इस जगत को नष्ट करने की अपेक्षा कर रहा था; बजाय इसके उसने इसे बचाने के लिए यीशु को भेजा। परमेश्वर के चरित्र के विषय में वह हमें क्या बतलाता है। किस प्रकार उसके चरित्र का हमारा ज्ञान प्रभाव डालता है कि हम कैसे रहते हैं? अगले 24 घंटे में आप अलग-अलग क्या करेंगे सीधे तौर पर जानने के परिणाम स्वरूप परमेश्वर किस प्रकार है?

बृहस्पतिवार **अक्टूबर 26**

व्यवस्था के कामों के बिना

"इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।"(रोमि० 3:28),यदि व्यवस्था हमें नहीं बचाता तो इसका अर्थ यह हुआ कि हमें व्यवस्था पालन की जरूरत नहीं? अपने जवाब की व्याख्या करें।

ऐतिहासिक प्रसंग में यहूदी रिवाज़ के तहत पौलुस रोमियों 3:28 में व्यवस्था के व्यापक अर्थ में बातें कर रहा था। कोई फर्क नहीं यहूदी इस रिवाज के तहत कितनी निष्ठापूर्वक जीवन जीने का यत्न करते थे, वह व्यक्ति धर्मी नहीं ठहराया जा सकता था। यदि वह यीशु को मसीहा के तौर पर ग्रहण करने से चूक जाता है।

रोमियों 3:28 पौलुस का निष्कर्ष है उसके दावे से कि विश्वास की व्यवस्था गर्व को अलग करती है। यदि एक व्यक्ति अपने स्वयं के कामों से धर्मी ठहरता है। तो, वह इसके लिए गर्व कर सकता है। परन्तु जब वह धर्मी ठहरता है क्योंकि यीशु उसके विश्वास का विषय वस्तु है, तब श्रेय स्पष्ट रूप से परमेश्वर को जाता है, जिसने पापियों को धर्मी (न्यायोचित) ठहराया।

एलेन जी० ह्वाईट इस प्रश्न का रोचक जवाब देती है? "विश्वास केद्वारा धार्मिकता क्या है?" उसने लिखा - "यह परमेश्वर का काम है - धूल में मनुष्य की महिमा को दफन करना, और मनुष्य के लिए वह करना जो स्वयं अपने लिए करना उसके सामर्थ्य में नहीं है।" *-एलेन जी० ह्वाईट, टेस्टीमोनीज टू मिनिस्टर्स एण्ड गोस्पल वर्कर्स, पेज 456*

व्यवस्था के काम अतीत के गुनाहों के लिए प्रायश्चित नहीं कर सकते। धार्मिकता हासिल नहीं की जा सकती है। यह मसीह के प्रायश्चित बलिदान में विश्वास के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। अत: इस अर्थ में धार्मिकता के लिए व्यवस्था के कामों का कोई औचित्य नहीं। कर्मों के बिना धार्मिकता का अर्थ हम में बिना किसी चीज के जिसके गुण स्वरूप धर्मी बनें, धर्मी बनाया जाना।

परन्तु बहुत से मसीहियों ने इस प्रसंग को गलत समझा और गलत व्यवहार किया है। वे कहते हैं किसी को वह सब करना है तो वह विश्वास है, जब काम करके बताया जाता है तो काम करता है या आज्ञाकारी होता है, नैतिक व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी। ऐसा करने पर वे पूरी तरह पौलुस को गलत पढ़ते हैं। रोमियों की किताब में और अन्यत्तर पौलुस नैतिक व्यवस्था के पालन को बहुत महत्त्व देता है। यीशु ने निश्चित रूप से किया जैसा याकूब और यूहन्ना ने किया (मत्ती 19:17; रोमि० 2:13; याकूब 2:10,11; प्रका० 14:27) पौलुस का संकेत यह है, यद्यपि धार्मिकता के लिए व्यवस्था को मानने की कोई आवश्यकता नहीं है, जो व्यक्ति विश्वास के द्वारा धर्मी गिना गया है अभी भी परमेश्वर की व्यवस्था को मानता है और वाकई, वहीं एक है जो व्यवस्था को मान सकता है। एक जिद्दी व्यक्ति जो न्यायोचित नहीं ठहराया गया है, व्यवस्था की मांगों को कभी पूरी नहीं कर सकता।

इस तर्क में फंसना क्यों इतना सहज है कि व्यवस्था हमें नहीं बचाता, हमें इसे मानने की कोई चिंता नहीं? क्या आपने विश्वास के द्वारा धार्मिकता को दावा करने से पाप की कभी तर्कसंगत व्याख्या की है? वह क्यों बहुत खतरनाक दशा है? इसी समय, जब इसे दुरुपयोग करने के लिए आकर्षित होते हैं, उद्धार की प्रतिज्ञा के बिना हम कहाँ होंगे?

शुक्रवार **अक्टूबर 27**

अतिरिक्त अध्ययन: सेलेक्टेड मैसेजेस बुक 1 में एलेन जी० ह्वाईट के लेखों को पढ़ें, "द राइचियसनेस ऑफ ख्राईस्ट इन द लॉ,"पेज 236-239; "कम एण्ड सीक एण्ड फाईड", पेज 331-335;"परफैक्ट ऑबेडिएन्स थ्रू ख्राईस्ट," पेज 373, 374, एवं ख्राईस्ट ऑबजेक्ट लेसन्स में "थिंक्स न्यू एण्ड ओल्ड", पेज 127, 129

"यद्यपि व्यवस्था पाप के दण्ड को कम नहीं कर सकती, पर उसके सभी कर्ज को पापी से वसूल करती है, मसीह ने बहुतायत की क्षमा देने की प्रतिज्ञा की है, उनका जो पश्चात्ताप करते हैं, और उसकी दया पर भरोसा करते हैं। परमेश्वर का प्रेम पश्चात्तापी और विश्वासी, आत्मा पर बहुतायत के साथ दिया जाता है। आत्मा पर पाप का कलंक केवल उसके प्रायश्चित बलिदान के खून के द्वारा ही मिट सकता है जो पिता के तुल्य है। मसीह का काम - उसका जीवन, अपमान, मृत्यु एवं खोये मनुष्य के लिए मध्यस्थता - व्यवस्था को बढ़ाता एवं इसे आदरणीय बनाता है।" - *एलेन जी० ह्वाईट, सेलेक्टेड मेसेजेस, बुक 1, पेज 371* ।

"मसीह का चरित्र आपके चरित्र के स्थान पर खड़ा होता है, और आप परमेश्वर के सामने ग्रहण किये जाते हैं मानो आपने पाप ही नहीं किया था।" - *एलेन जी० ह्वाईट "मसीह की ओर कदम", अंगेजी, पेज 62* ।

"जब प्रेरित कहता है कि हम "व्यवस्था के कामों के बिना" धर्मी ठहराये गये हैं, वह विश्वास और अनुग्रह के कामों के विषय बातें नहीं करता; क्योंकि जो ऐसे काम करता है वह विश्वास नहीं करता कि वह इन कर्मों के द्वारा धर्मी ठहरा है। (ऐसे विश्वास के कर्मों को करने के दौरान), विश्वास धर्मी ठहराये जाने की मांग करता है (विश्वास के द्वारा)। 'व्यवस्था के कर्म' का प्रेरित जो अर्थ लगाता है वे कर्म जिनमें स्वधर्मी भरोसा करता है मानो उन्हें करने के द्वारा, वे धर्मी ठहराये गये और इस प्रकार अपने कर्मों के अनुसार ध र्मी ठहरे। दूसरे शब्दों में, अच्छाई करने के दौरान वे बाद के धार्मिकता की खोज नहीं करते, परन्तु वे केवल गर्व करने की इच्छा करते हैं जिसे उन्होंने पहले ही अपने कर्मों के द्वारा धार्मिकता को पा लिया है।" -*मार्टिन लूथर, कामेंटरी ओन रोमनस्, पेज 80*

विचार-विमर्श के लिए प्रश्नः

- इस सप्ताह के अवतरणों को पढ़ें और तब, अपने शब्दों में पाराग्राफ लिखें जो वे कह रहे हैं। कक्षा में एक दूसरे के आपके सारांश को साझा करें।
- लूथर की टिप्पणी को ऊपर पढ़ें। क्यों इस प्रकार के सत्य ने उसे उकसाया है? जिसे उसने कहा क्यों एक निर्णायक तर्क है जिसे आज हमें भी समझना है?
- "सेवेंथ डे ऐडवेंटिस्टस स्वयं को सुधार अंतर्दृष्टि के उत्तराधिकारी और निर्माता के रूप में देखते हैं जो केवल विश्वास से अनुग्रह के द्वारा धार्मिकता की बाइबलीय शिक्षा पर आधारित और जीर्णोद्धारक, पूर्णता के प्रतिवादक, स्पष्टता, और प्रेरिताई सुसमाचार का संतुलन करने वाले हैं।" -*इवान टी० ब्लेजन, "सल्वेशन", हैण्ड बुक ऑफ एस०डी०ए० थेयोलोजी, पेज 307,* हमारे स्वयं के विषय विश्वास करने के हमारे पास क्या कारण हैं जो यहाँ पर लिपिबद्ध है?